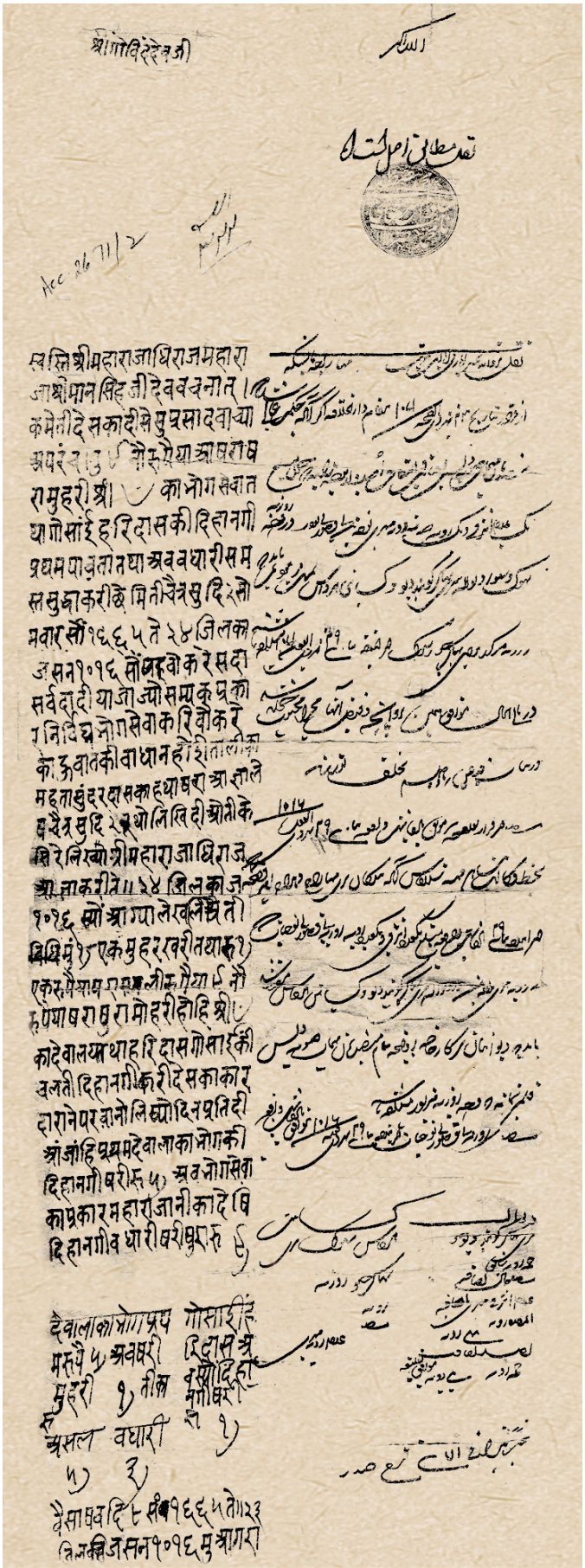

श्री गोविंद देव जी एवं गोसाईं हरिदेव जी को महाराजा मान सिंह द्वारा जारी द्विभाषी (हिंदी व फारसी) अनुदान पत्र, 1608 ई.

पांडुलिपियां, दुर्लभ ग्रंथ व प्रारंभिक भाषाई नमूने

इस खण्ड में अनेक ऐसे दुर्लभ ग्रंथ, पांडुलिपियां व भाषाई नमूने प्रस्तुत किये गये हैं जो एक आधुनिक भाषा के रूप में हिंदी के विकास की रोचक कथा कहते हैं। विभिन्न संदर्भों में अलग-अलग रचनाकारों द्वारा सृजित इन ग्रंथों व पांडुलिपियों के माध्यम से हिंदी भाषा को जो वैचारिक एवं साहित्यिक अस्मिता प्राप्त हुई, उससे जुड़े अनेक ज्ञात, अल्प-ज्ञात और अज्ञात पहलुओं पर ये ग्रंथ व पांडुलिपियां प्रकाश डालती हैं । रजवाड़े प्रशासन के प्रांरभिक भाषा के नमूनों के दुर्लभ पत्र तथा कश्मीर के महाराजा रणवीर सिंह के संग्रह के दुर्लभ ग्रंथों के अलावा चंदवरदाईकृत 'पृथ्वीराजरासो', तुलसीदासकृत 'रामचरितमानस' आदि पांडुलिपियां इस खंड में दिखाई गई हैं। आधुनिक हिंदी की नींव रखने वाली संस्था फोर्ट विलियम कॉलेज के तत्वावधान में तैयार किए गए भाषा व साहित्य के प्रारम्भिक हिंदी ग्रंथ आदि इस खंड के विशेष आकर्षण हैं।

चंदवरदाई विरचित 'पृथ्वीराजरासो' की पांडुलिपि का पृष्ठ, पांडुलिपि काल 1872

A page from the original handwritten manuscript of the ancient Hindi literary composition "Prithviraj Raso" by Chandvardai, 1872.

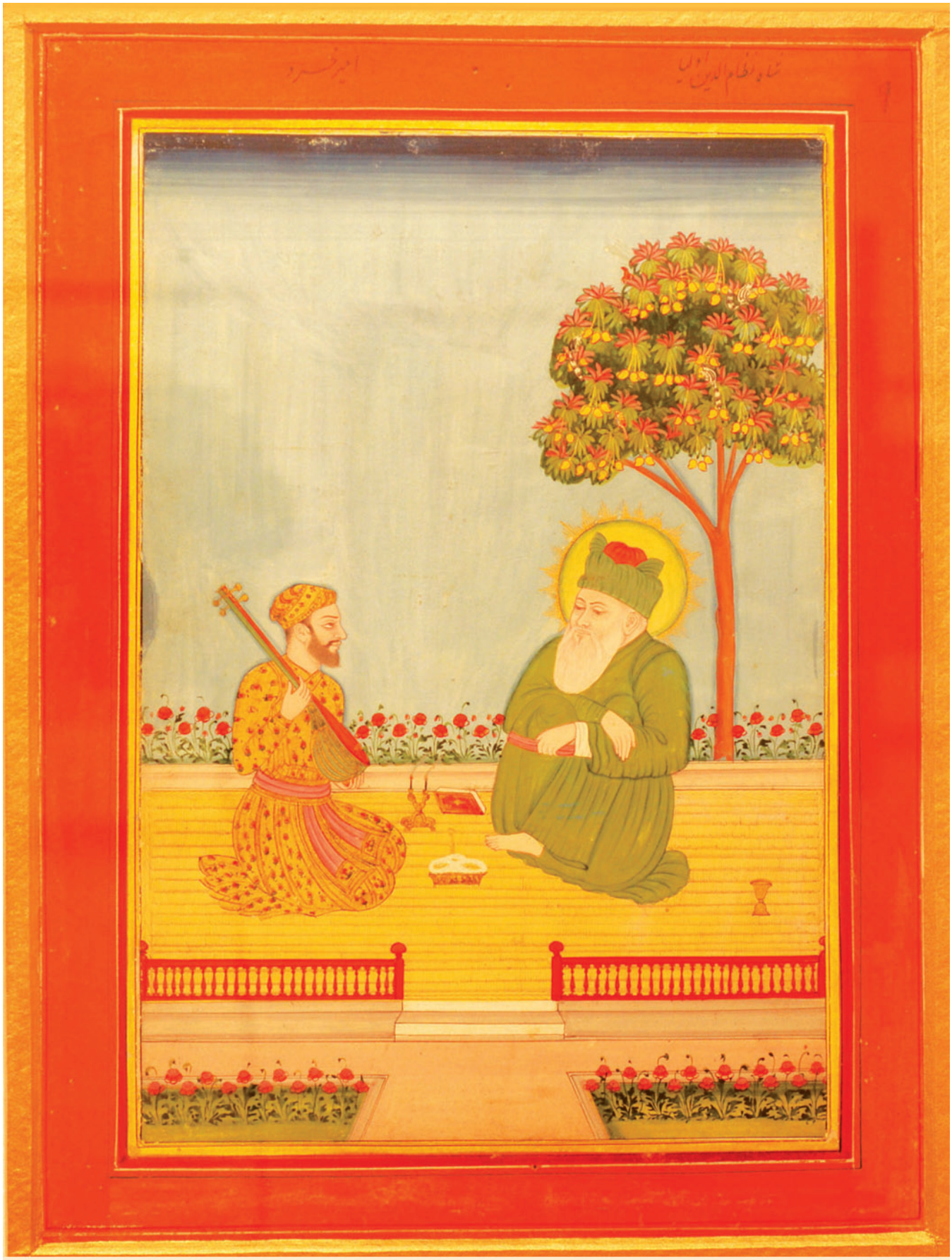

हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया और उनके कवि संगीतकार शिष्य अमीर खुसरो, हैदराबाद, दक्कन, लगभग 1750 ई0

Hazrat Nizam-ud-din Auliya and his poet lyricist devotee, Amir Khusrau, Hyderabad, Deccan, around 1750.

संत कबीर एवं रैदास (रविदास), जहांगीर कालीन, लगभग 1620-30 ई0

A miniature painting of Sant Kabir and Raidas (Ravidass) made during the reign of the Mughal emperor Jahangir, between 1620-30.

'रामचरितमानस' के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास, जोधपुर, राजस्थान, लगभग 1800 ई०

Author of 'Ramcharitmanas', Goswami Tulsidas, Jodhpur, Rajasthan around 1800.

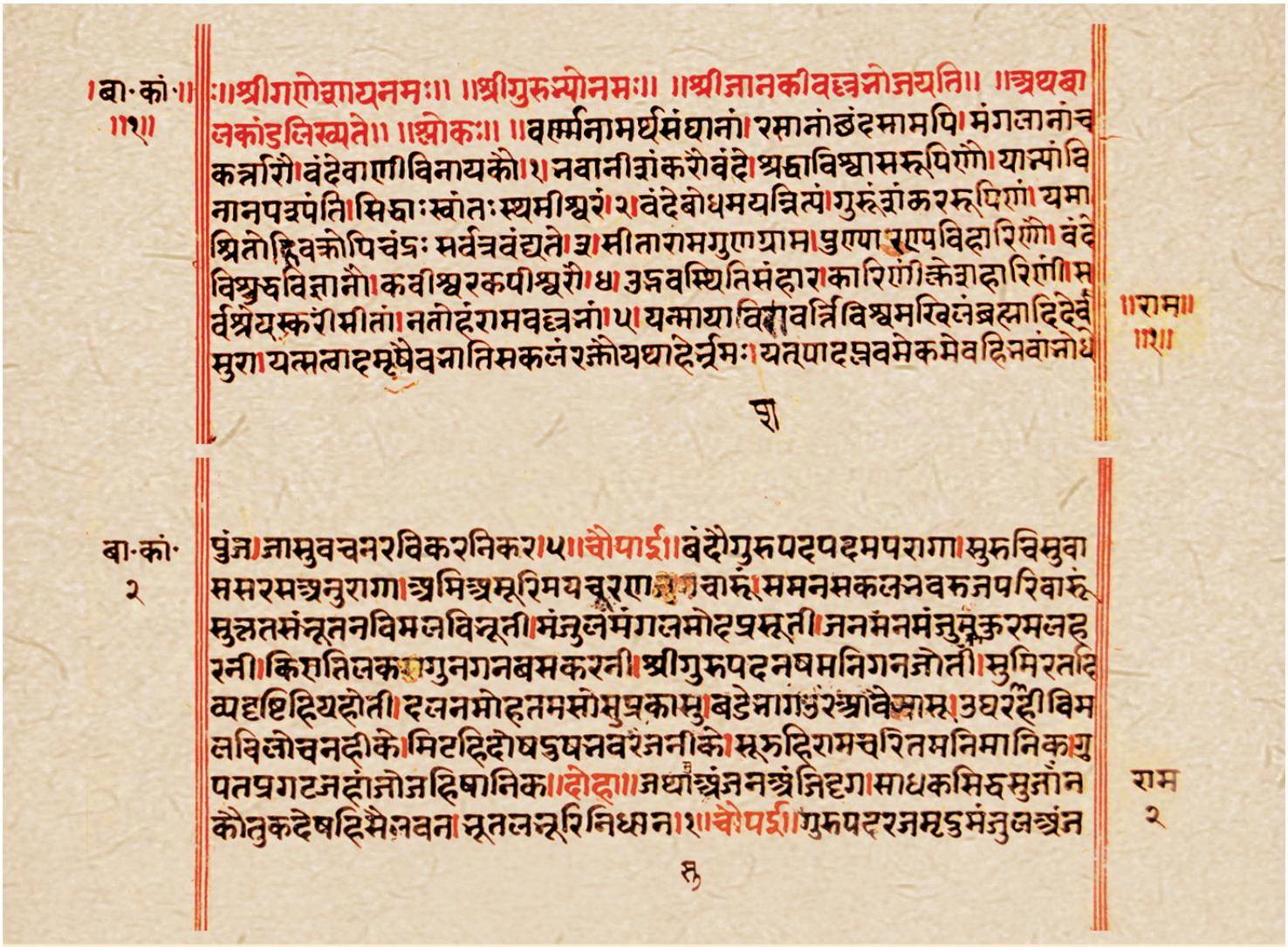

'रामचरितमानस' के बालकांड का अंश

Excerpts from the 'Balkanda' Chapter of 'Ramcharitmanas' authored by Tulsidas.

मीरा, 19वीं शती, राजस्थान

Meera, 19th century, Rajasthan.

जायसीकृत 'पद्मावत' के दृश्य प्रदर्शित करता हुक्के का आधार, 19वीं शती, बिदर, दक्कन, मिश्र धातु, चाँदी

A Bidri "Hukka' base, embossed with scenes from Jayasi's "Padmavat", Mixed metal media, 19th century.

AB2/6 /62 पद्मावत ।

मलिक मुहम्मद जायसी विरचित ।

कलकत्ता

३४।१ कोलुटोलास्ट्रीट, बङ्गवासी ष्टीम-मेशिन-प्रेसमें

श्रीकेवलराम चट्टोपाध्याय द्वारा

मुद्रित और प्रकाशित ।

सम्वत् १९५२ ।

दाम ॥) आठ आना ।

पद्मावत ।

पद्मावत ।

स्तुतिखण्ड ।

सुमिरउं आदि एक करतारू । जें जिव दीन्ह कीन्ह संसारू ॥
कीन्हेसि प्रथम ज्योति परकासू । कीन्हेसि तिनहिं प्रीति कैलासू ॥
कीन्हेसि अग्नि पवन जल खेहा । कीन्हेसि बहुतै रंग औरेहा ॥
कीन्हेसि धरती सरग पतारू । कीन्हेसि बरन बरन अवतारू ॥
कीन्हेसि दिन दिनेस ससि राती । कीन्हेसि नखत तरायनपांती ॥
कीन्हेसि धूप सेव औ छांहा । कीन्हेसि मेघ बीजु तेहि मांहा ॥
कीन्हेसि सप्त महौ ब्रह्मण्डा । कीन्हेसि भुवन चौदहो खण्डा ॥
कीन्ह सबै अस जाकर दूसर छाजन काहि ।
पहिले ताकर नाउं लै कथा करौं अवगाहि ॥
कीन्हेसि सात समुन्दर पारा । कीन्हेसि मेरु खखण्ड पहारा ॥
कीन्हेसि नदी नार औ झरना । कीन्हेसि मगर मच्छ बहुबरना ॥
कीन्हेसि सीप मोति तहं भरे कीन्हेसि बहुतै नग निरमरे ॥
कीन्हेसि बनखंड औ जड़मूरी । कीन्हेसि तरवर तार खजरी ॥
कीन्हेसि सावज आरन रहें । कीन्हेसि पंख उड़ें जहं चहें ॥

मलिक मुहम्मद जायसी विरचित 'पद्मावत' का एक प्रारंभिक मुद्रित संस्करण, 1895 ई.

An early priced edition of 'Padmavat', authored by Malik Mohammad Jayasi, 1895.

१ ॐश्रीरामायनमः अथाषेटकप्रश्नलिखते
हैं। अक्षकारकाप्रश्नहै लग्नस्थितेसूर्यसुजे
श्वराहो सूर्येणदितेवैरिनिमंत्रितस्य आखे
टकस्यात्सकलोरिहृष्णाकष्टादहृष्णाविफ
लोल्पकोवा १ अर्थभाषा लग्नमेशनिहो
वे यांराहूहोवे सूर्यककेंदेषेदाहोवे अथ

वाशाहुग्रहकर्केंदेषेदाहोवे तोअक्षाषिका
रमिलिताहै दूसरेआठमीकर्केप्रेरयाहोया
अथवाकठनसेमिलताहै यदकोईग्रहवी
नहीदेषताहोवे थोडावीनहिमिलताहै।
दोचारके अंदरमिलेंगे १

२ ईसयोगाकीकुंडली १ नंबर २

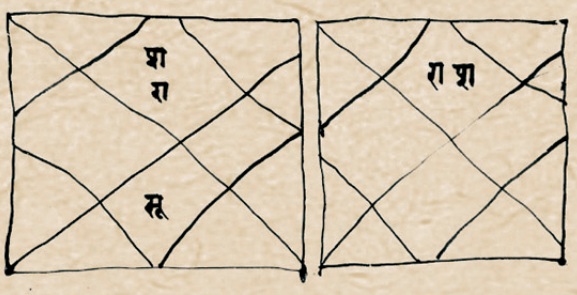

लग्नेस्थेरेघूनगतेविलग्ने जायेस्थरेस्यान्मृग
याप्रभूता घूनेस्थरेमंदगतोसहृष्णास्वल्पा
वलाप्योदितिजेष्यगुर्वी २ अर्थभाषा ल
ग्नकास्वामिसप्तमेस्थानमेहोवे सप्तमेचर
दास्वामि लग्नमेहोयतो शिकारवहुतमि
लताहै अरुसप्तमेचरदास्वामिशनिहोवे

आखेटप्रश्नम् – कश्मीर के महाराजा रणबीर सिंह जी (1857-1885) के संग्रह में ज्योतिष संबंधी ग्रंथ के पृष्ठ

Extracts from "Aakhet Prashnam", a manuscript from the collection of Maharaja Ranbir Singh (1857-85) of Kashmir relating to astrology as applied for the royal pursuit of big-game hunting.

श्रीरघुनाथो जयति

१ पहिला भाग

अन्तराल के साथ गुल्म शिक्षा

१— जब थोड़े से सिपाही हाथ २
के अन्तर पर पार्श्वतः पंक्ति में स्थित
होते हैं तब उस को सांतर गुल्म करते हैं
२— यदि आवश्यक होवे तो ऐसी
२ दो पंक्तियों का भी गुल्म बनावे परं
तु दूसरी पंक्ति के सिपाहियो को प्र
थम पंक्ति के अंतरालों के पीछे ख
ड़ा करना चाहिये कि जिसमें गमन
के समय वे लोग १० प्रकरण में लि
खित अपने २ चिह्नों को देख सके
३— शिक्षक को चाहिये कि नये
सिपाहियो को पहिले असम रूप से

६

संमुखे दृष्टिः

आइज फ्रंट

इस आज्ञा पर सिर और आंखों को
सामने की ओर फेरके बांह को नीचे
गिराओ और प्रथम प्रकरण में लिखि
त सिपाही की स्थिति को धारण करो

वामे दृष्टिः

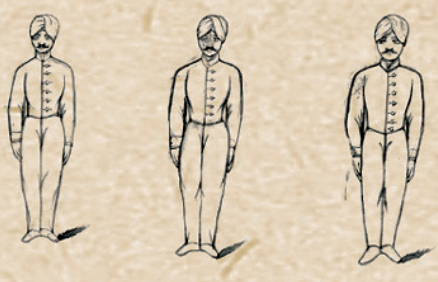

आइज़ लेफ्ट

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से सि
र को थोड़ा सा अपेक्षित दिशा की ओर
मोड़ कर आंखों को बांई ओर फिराओ

समाः

ड्रेस

इस आज्ञा पर भी पूर्वोक्त प्रकार से
काम करना चाहिये विशेष केवल इ
तना ही है कि दक्षिण हाथ की जगह बा
यां हाथ उठाया जावेगा

जब एक ही श्रेणी होती है तब वह
सम्मुख श्रेणी की तरह काम करती है

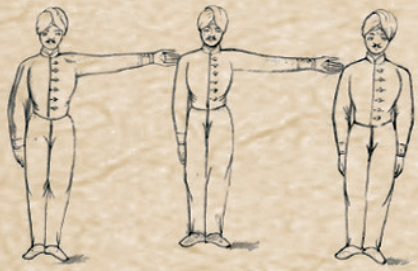

पदाति शिक्षा का पहिला
भाग समाप्त भया
शुभम्

'पदाति शिक्षा': आधुनिक सैन्य शिक्षा पर आधारित ग्रंथ के पृष्ठ, प्रतिलिपि काल: 19वीं शती

Extracts from "Padati Shiksha" - a manuscript from the collection of Maharaja Ranbir Singh of Kashmir, elaborating on the finer nuances of military training, 19th century.

बिहारी रचित काव्य सतसई पर आधारित लघुचित्र, मेवाड़, राजस्थान, लगभग 1720 ई०

A miniature painting based on 'Satsai', a collection of couplets by Bihari Mewar, Rajasthan, around 1720 A.D.

मतिराम के काव्य 'रसराज' पर आधारित लघुचित्र, दतिया, बुन्देलखंड, मध्य भारत, लगभग 1780-90 ई०

A miniature painting based on a poem by Matiram entitled 'Rasraj', Datiya, Bundelkhand, Madhya Pradesh, around, 1780-90.

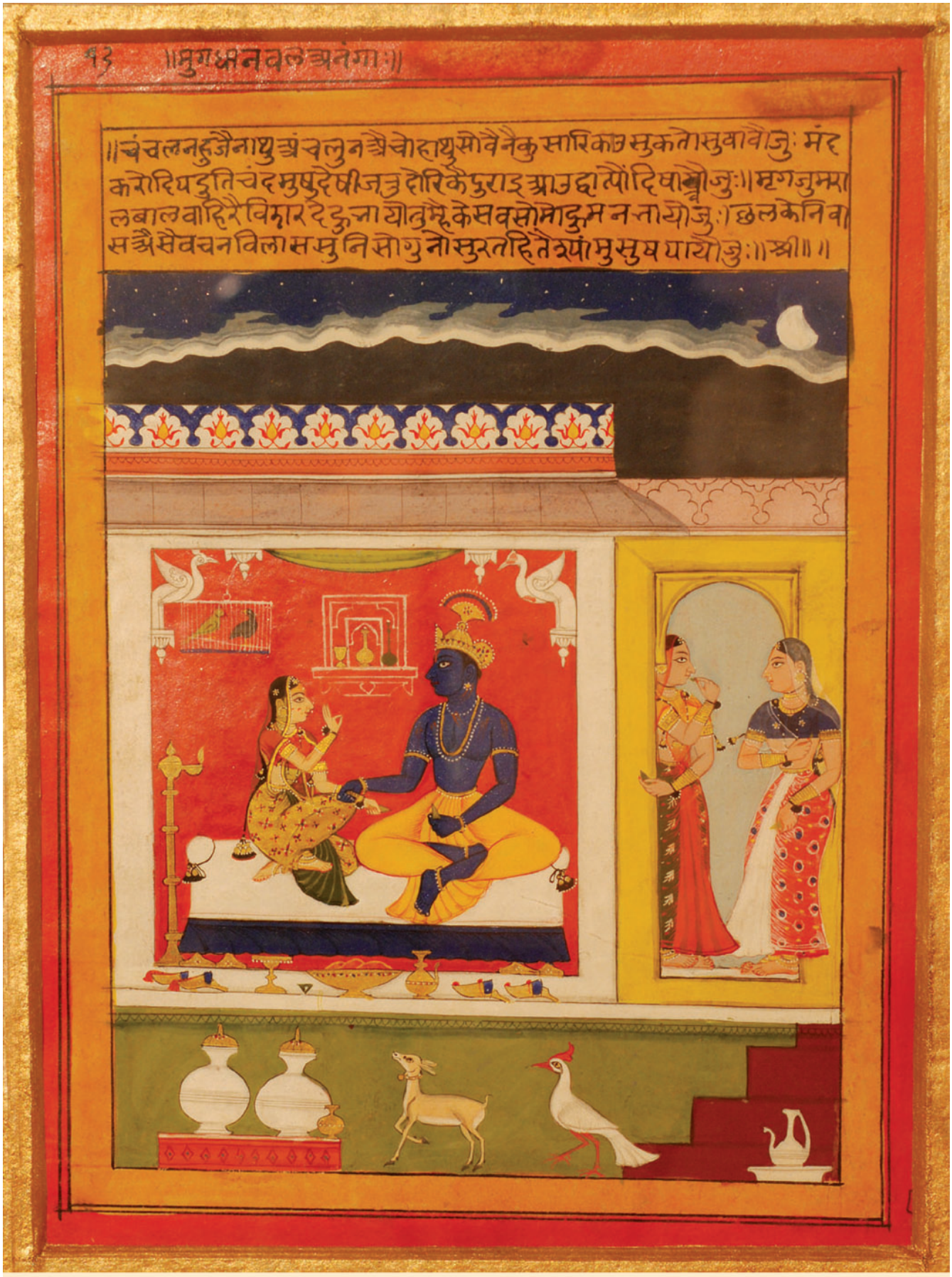

केशवदास रचित काव्य 'रसिकप्रिया' पर आधारित लघुचित्र, मेवाड़, राजस्थान, लगभग 1640 ई0, चित्रकार : साहिबदीन

A miniature painting by Sahibdeen, based on 'Rasikpriya', a poetic composition of Keshavdas, around 1640 A.D.

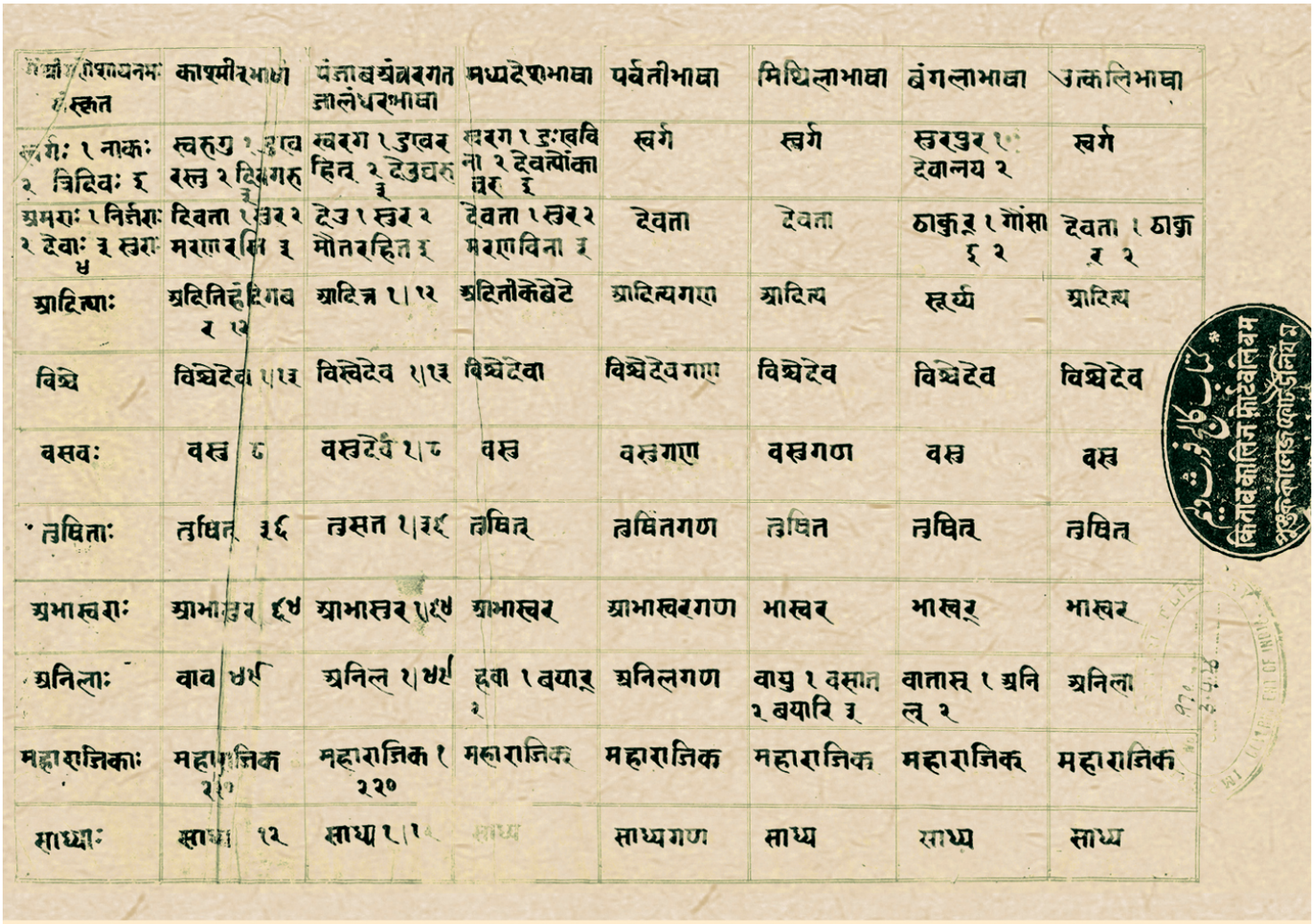

[illegible] संस्कृत	काश्मीरभाषा	पंजाबअंबरगत जालंधरभाषा	मध्यदेशभाषा	पर्वतीभाषा	मिथिलाभाषा	बंगलाभाषा	उत्कलिभाषा
स्वर्गः १ नाकः २ त्रिदिवः ३	स्वरग १ [illegible] रस्तु २ [illegible] ३	स्वरग १ दुखरहित २ देउघरु ३	स्वरग १ दुःखविना २ देवत्योंका घर ३	स्वर्ग	स्वर्ग	सुरपुर १ देवालय २	स्वर्ग
अमराः १ निर्जराः २ देवाः ३ सुराः ४	दिवता १ सुर २ मरणरहित ३	देउ १ सुर २ मौतरहित ३	देवता १ सुर २ मरणविना ३	देवता	देवता	ठाकुर १ गोंसा ई २	देवता १ ठाकुर २
आदित्याः	अदितिहं [illegible] र १२	आदित्त १।१२	अदितीकेबेटे	आदित्यगण	आदित्य	सूर्य्य	आदित्य
विश्वे	विश्वेदेव १।१३	विस्वेदेव १।१३	विश्वेदेवा	विश्वेदेवगण	विश्वेदेव	विश्वेदेव	विश्वेदेव
वसवः	वसु ८	वसुदेव १।८	वसु	वसुगण	वसुगण	वसु	वसु
तुषिताः	तुषित ३६	तुसत १।३६	तुषित	तुषितगण	तुषित	तुषित	तुषित
आभास्वराः	आभास्वर ६४	आभास्वर १।६४	आभास्वर	आभास्वरगण	भास्वर	भास्वर	भास्वर
अनिलाः	वाव ४९	अनिल १।४९	हवा १ बयार २	अनिलगण	वायु १ वसात २ बयारि ३	वातास १ अनिल २	अनिला
महाराजिकाः	महाराजिक २२०	महाराजिक १।२२०	महाराजिक	महाराजिक	महाराजिक	महाराजिक	महाराजिक
साध्याः	साध्य १२	साध्य १।१२	साध्य	साध्यगण	साध्य	साध्य	साध्य

फोर्ट विलियम कॉलेज संग्रह में विद्यमान बहुभाषी कोश

Multilingual Dictioniary in the collection of the Fort William College, Calcutta, 1800.

THE

HINDEE - ROMAN

ORTHOEPIGRAPHICAL

ULTIMATUM

OR

A Systematic, Discriminative View

OF

ORIENTAL AND OCCIDENTAL

VISIBLE SOUNDS,

ON

FIXED AND PRACTICAL

Principles

FOR

THE LANGUAGES OF THE EAST

EXEMPLIFIED IN THE POPULAR STORY

OF

SUK*OO*NTULA NA*T*UK.

BY

JOHN GILCHRIST,

" *Ne plus ultra,*"

SP 1/...

CALCUTTA.

HINDOOSTANEE PRESS.

1804

NATIONAL LIBRARY
Rare Book Section.

जॉन गिलक्रिस्ट द्वारा तैयार 'द हिंदी रोमन आर्थोएपिग्राफिकल अल्टीमेटम' का एक संस्करण, 1804

An edition of John Gilchrist's 'The Hindee-Roman Orthoepigraphical Ultimatum' 1804 A.D.

NATIONAL LIBRARY

PREM SAGUR;

OR,

THE HISTORY OF THE HINDOO DEITY

SREE KRISHN,

CONTAINING IN THE 10TH CHAPTER OF SREE BUHAGUVUT,

OF

VYASUDEVU.

TRANSLATED INTO HINDUVEE

FROM THE

BRIJ B,HASHA,

OF

CHUTOORB,HOOJ MISR.

BY SHREE LULLOO LAL KUB,

B,HASHA MOONSHEE IN THE COLLEGE OF FORT WILLIAM.

Calcutta.

PRINTED AT THE SUNSCRIT PRESS,

1810.

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

विघन विदारन विरद वर वारन वदन विकास ⁂ वर
दे बहु बाढै विसद वानी बुद्धि विलास ⁂ युगल
चरन जोवत जगत जपत रैन दिन तोहि ⁂ जग
माता सरस्वति सुमिरि युक्ति उक्ति दे मोहि ⁂ ॥

ऐक समैं ब्यासदेव कृत श्री मत भागवत के दसम स्कंध की कथा को
चतुर्भुज मिश्र ने दोहे चौपाई में ब्रज भाषा किया सो पाठशाला के लि
ये श्री महाराजा धिराज सकल गुन निधान पुन्यवान महा जान मारको
इस वलिजली गवरनर जनरल प्रतापी के राज में ⁂ कवि पंडि
त मंडित किये नग भूषन पहिराय ⁂ गाहि गाहि विद्या सकल बस
कीनी चितचाय ⁂ दान और चकुंचक्र में चढे कविन के चित ⁂ आ
वत पावत लाल मनि हय हाथी बहु वित ⁂ श्री श्री युत गुनगाह
क गुनियन सुखदायक जान गिलकिरिस्त महाशय की आज्ञा से सं
वत् १८६० में श्री लल्लूजी लाल कवि ब्राह्मन गुजराती सहस्र अव
दीच आगरे वाले ने विस का सार ले - यामनी भाषा छोड -

फोर्ट विलियम कालेज के भाषा मुंशी श्री लल्लू लाल द्वारा ब्रजभाषा के 'प्रेमसागर' का हिंदुवी में किया गया अनुवाद, 1810

A Hinduvee translation of 'Premsagar' originally in Brajbhasha, by Shri Lallu Lal, the 'Bhasha Moonshee' or language scribe of Fort William College, 1810.

VOCABULARY,

KHUREE BOLEE AND ENGLISH,

OF THE

PRINCIPAL WORDS

OCCURRING IN

THE PREM SAGUR.

Hindoostanee press,
Calcutta
1814.

A

V O C A B U L A R Y,

KHUREE BOLEE AND ENGLISH,

OF THE

PRINCIPAL WORDS

OCCURRING IN

THE PREM SAGUR.

अंग अंत

S. अ An inseperable particle, signifying negation or privation; as अधर्म injustice, from धर्म justice. As a negative prefix to words beginning with a vowel, अ is changed to अन्, as अ and अंत form अनंत.

K. अंकवार f. Embrace, the bosom.

S. अंकस } (S. अंकुश) m. The iron
S. अंकस } hook with which elephants are guided or driven.

S. अंगुरी (S. अंगुली) f. A finger.

S. अंगीकारकरना v. a. To accept, to receive, to agree to.

K. अंगोछा m. A cloth with which Hindoos wipe themselves after bathing; a towel.

S. अंत 1 m. End, completion. 2 adv. After all, at last.

S. अंतर m. 1 Intermediate space, interval. 2 Heart. 3 Difference.

S. अंतरिक्ष m. The sky or atmosphere.

S. अंतर्जामी Acquainted with the

विलियम प्राइस द्वारा 'प्रेमसागर' के शब्दों पर आधारित खड़ी बोली व अंग्रेजी में तैयार कोश, 1814

Vocabulary in Khuree Bolee and English of the principal words occuring in the 'Premsagar', 1814.

THE

HINDEE-ROMAN

ORTHOEPIGRAPHICAL ULTIMATUM;

OR A

SYSTEMATIC, DISCRIMINATIVE VIEW

OF

ORIENTAL AND OCCIDENTAL VISIBLE SOUNDS,

FIXED AND PRACTICAL PRINCIPLES

FOR

SPEEDILY ACQUIRING THE MOST ACCURATE PRONUNCIATION OF MANY

ORIENTAL LANGUAGES;

EXEMPLIFIED IN ONE HUNDRED POPULAR ANECDOTES, TALES, JESTS, MAXIMS, AND PROVERBS

OF THE

HINDOOSTANEE STORY TELLER.

BY JOHN BORTHWICK GILCHRIST, LL.D.

SECOND EDITION.

LONDON:

PRINTED FOR BLACK, KINGSBURY, PARBURY, AND ALLEN, BOOKSELLERS TO THE. HON. EAST-INDIA COMPANY, LEADENHALL STREET.

1820.

THE NAGUREE ALPHABET.

(in their initial, medial, and final forms, expressive of u, a, &c. all respectively under the significant names of u-*kar*, a-*kar*, ku-*kar*, the k maker, &c. — each being equivalent to our own roman letters, in the several english words—)

Numbers.		Letters.	Names.	Powers.
१	1	: अ	u	ulcer.
२	2	ा आ	a, viz. u,u	all.
३	3	ि इ	i	ill.
४	4	ी ई	ee, viz. ii	eel.
५	5	ु उ	ω	wωl.
६	6	ू ऊ	oo, viz. ωω	cool.
७	7	ृ ऋ	ṛi	ṛill.
८	8	ॄ ॠ	ṛee	ṛeel.
९	9	ॢ ऌ	ḷi, ḷri	ḷilly.
१०	10	ॣ ॡ	ḷee, ḷree	ḷee, pronounced ḷree.
११	11	े ए	e	ere, air.
१२	12	ै ऐ	ue, ui, uee	guile, eye, buy.
१३	13	ो ओ	o	old.
१४	14	ौ औ	uo	our, uor.
१५	15	ं अं	ṇ	sans. v. ३१ & cxiv.
१६	16	: अः	ụ, uḥ.	us.

THE NAGUREE ALPHABET *continued.*

Numbers.		Letters.	Names.	Powers.
१७	17	क क	ku	kirk.
१८	18	ख ख	kḥu	kir-kḥill.
१९	19	ग ग	gu	dog.
२०	20	घ घ	gḥu	do-gḥead.
२१	21	ङ	ngu.	sing, sink.
२२	22	च च	chu, tshu	church.
२३	23	छ	chḥu, tshḥu	chur-chḥill.
२४	24	ज ज	ju, dzhu	judge, juj.
२५	25	झ झ	jḥu, dzhḥu	judge him, ju-jḥim.
२६	26	ञ ञ	nu.	change.
२७	27	ट ट	ṭu	nut.
२८	28	ठ ठ	ṭḥu	nu-ṭḥook.
२९	29	ड ड़	ḍu, ṛu	dub, bud.
३०	30	ढ ढ ढ़	ḍḥ, ṛḥ	aspirated ḍ, ṛ.
३१	31	ण ण	ṇu.	sand, v. cxix.
३२	32	त त	tu	tube.
३३	33	थ थ	tḥu	ho-tḥead.
३४	34	द द	du	dupe.
३५	35	ध ध	dḥu	go-dḥead.
३६	36	न न	nu.	noon.

जॉन बी0 गिलक्रिस्ट द्वारा तैयार 'द हिंदी – रोमन आर्थोएपिग्राफिकल अल्टीमेटम' द्वितीय संस्करण, 1820

Second and revised edition of John. B. Gilchrist's 'The Hindi-Roman Orthoepigraphical Ultimatum', 1820.

गीतं

हमारे प्रभु और त्राणकरनहारे

यिशु खीष्टकी वन्दिगीमें

गानेके वास्ते ॥

देखो पृथ्वीके अन्तसे हमारे प्रभु यिशुके नामके

गान सुननेमें आए हैं ॥

तामसेन छात ॥

श्रीरामपुरमें छापा हुआ ॥

सन १८२८ मसीहीमें ॥

१ पहिला गीत ।

(Bengalee Metre.)

अपराधीका विलाप और आशा ।

मैं हूं बडा गुनहगार अपराधी सबसे
छमा करो दयाल यिशु सामर्थ तुम्हीमें ॥

१ पापसे मैं तो खराब हुआ
खीष्टसे मेरा कल्याण हुआ
भरोसा मेरे मनमें है कि मैं हूंगा
खीष्टके मरणसे उद्धार ॥

२ पापमें तो मैं था अज्ञान
खीष्टसे मुझे हुआ ज्ञान
यिशुका मरण मेरे यिशुका मरण
वही जीवनका रास्ता ॥

३ खीष्टके प्रेममें बांधा गया
उससे मेरा कल्याण हुआ
यिशुको मैं अब दिलसे यिशु खीष्टके मैं
कभु नहीं छोडूंगा ॥

४ सुनो ऐ भाइवंद
सुनो तुम्ह सब अकलमन्द
यिशु खीष्ट विना मेरा यिशु खीष्ट विना
तारणवाला नहीं है और ॥

इसाई मिशनरी द्वारा श्रीरामपुर प्रेस में छपी यीशु-गान की पुस्तक, प्रकाशन – 1828

Inner cover of a book of devotional Christian hymns published by Christian Missionaries from Serampore, 1828.

छत्रप्रकाश

ग्रंथ

बुंदेलखंड के राजा छत्रसाल का वंश

औ युद्ध औ विजय वर्णन

किया हुआ

श्री लाल कवीश्वर का

हिंदी भाषा में

फोर्त उलियम के कालिज के हिंदी औ हिंदूस्थानी अध्यापक

कपतान उलियम प्राइस साहिबने

छापवाया संस्कृत पाठशाला के छापेखाने में

कलकत्ता १८२९ ईसवी

॥ अथ छत्रप्रकाश की सूचनिका ॥

प्रकरण	पत्रांक
बुंदेलाजन्मवर्णनं	१
बुंदेलवंशवर्णनं	१४
छत्रसालनृपतेः पूर्वजन्मकथा वर्णनं	२४
छत्रसाल बालचरित्र बालगोविंद नृत्य वर्णनं	३४
चौरवध पहारसिंह प्रपंचवर्णनं	४१
औरंगजेब प्रपंच चंपतिराइ विक्रम मुकुंदसाहावध दारासाह पराजय छत्रसाल हाड़ाबधवर्णनं	६२
सुभकरन पराजय बंकावधवर्णनं	७५
चंपति प्रनाश	९०
जयसिंह संमिलनं	१०४
देवगढ़ जीति वर्णनं	११६

प्रकरण	पत्र
नृपसुजानसिंह मिलाप	१२
रतनसाह छत्रसालसंवाद	१४
केसीराय दागीबधवर्णनं	१५१
सैदबहादुरयुद्ध वा कुंवरन कौ आगमन	१६२
रनदूलह पराजय	१६९
तहवरयुद्धवर्णनं	१७३
अनवर पराजय	१८५
सुतरदीन पराजय	१९७
हमीदखान सैदलतीफ शेख मवाशी पराजय	२०८
अबदुलसमद पराजय	२१२
बहलोलखान मयानी मरणं	२२६
मौधासटौधविजय	२३०
प्राननाथ शिक्षा	२४०
कृष्णजन्म वर्णनं	२५३
प्राननाथवरदानं	२६३
छत्रसाल कौ दिल्ली तैं मऊ आगमनं	२६४

॥ छत्र प्रकाश ॥

———

॥ दोहा ॥

एक रदन सिंधुर बदन दुरबुधितिमिर दिनेश।
लंबोदर असरन सरन जै जै सिद्धिगनेश ॥ १ ॥

॥ छंद पायाकुलक ॥

सिद्धिगनेश बुद्धि बर पाऊं।
कर जुग जोरि तोहि सिर नाऊं।
तूं अघ के अघ ओघन खंडै।
अधिक अनेकन विघन बिहंडै ॥ २ ॥
प्रथम करै सुर नर मुनि पूजा।
और कौन गनपति सम दूजा।
भौभंजन सेवक गुन गावै।
मूषक बाहन मोदक पावै ॥ ३ ॥
उच कुंभ सिंदूर चढ़ावै।
रबि उदयाचल छबिहि बढ़ावै।

क

कैप्टन विलियम प्राइस द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'छत्र प्रकाश', 1829 ई.

'Chhatra-Prakash' a book published by Captain William Price, 1829.

HINDÍ SELECTIONS.

By

Sivaprasad Sitarehind

COMPILED UNDER THE DIRECTIONS OF THE

COMMISSION,

APPOINTED BY THE ORDER OF THE GOVERNMENT OF INDIA IN THE MILITARY DEPARTMENT NO. 175 DATED 10TH SEPTEMBER 1864 TO ARRANGE FOR THE PREPARATION OF HINDUSTÁNI CLASS BOOKS AS LANGUAGE TESTS TO BE PASSED BY JUNIOR CIVIL SERVANTS AND MILITARY OFFICERS.

BENARES:

PRINTED AT THE MEDICAL HALL PRESS.

1867.

॥ राजाभोज का सपना ॥

यह कौनसा मनुष्य है जिसने महा प्रतापी राजा महाराज भोज का नाम न सुना हो उसकी महिमा और कीर्ति तो सारे जगत में व्याप रही है बड़ बड़े महिपाल उसका नाम सुनते ही कांप उठते थे और बड़े बड़े भूपति उसके पांव पर अपना सिर नवाते सेना उसकी समुद्र की तरंगों का नमूना और ख़ज़ाना उसका सोने चांदी और रत्नों की खान से भी दूना उसके दान ने राजा करण को लोगों के जी से भुलाया और उसके न्यायने विक्रम को भी लजाया कोई उसके राज भर में भूखा न सोता और न कोई उघाड़ा रहने पाता जो सत्तू मांगने आता उसे मोतीचूर मिलता और जो गज़ी चाहता उसे मलमल दिया जाता पैसे की जगह लोगों को अशरफ़ियां बांटता और मेह की तरह भिखारियों पर मोती बरसाता एक एक श्लोक के लिये ब्राह्मणों को लाख लाख रुपया उठा देता और एक एक दिन में लाख लाख गो दान करता सवा लाख ब्राह्मणों को षट्रस भोजन कराके तब आप खाने को बैठता तीर्थ यात्रा स्नान दान और व्रत उपवास में सदा तत्पर रहता बड़े बड़े चांद्रायण किये थे और बड़े बड़े जङ्गल पहाड़ छान डाले थे एक दिन शरद ऋतु में संध्या के समय सुंदर फुलवाड़ी के बीच स्वच्छ पानी के कुंड के तीर जिसमें कुमुद और कमलों के बीच जल पक्षी कलोलें कर रहे थे रत्न जटित सिंहासन पर कोमल तकिये के सहारे से स्वस्थ चित्त बैठा हुआ महलों की सुनहरी कलसियां लगी हुई संगमर्मर की गुम्ज़ियों के पीछे से उदय होता हुआ पूर्णिमा का चांद देख रहा था और निर्जन एकान्त होनेके कारन मनही मनमें सोचता कि अहो मैंने अपने कुल को ऐसा प्रकाश किया जैसे सूर्यसे इन कमलों का विकास होता है क्या मनुष्य और क्या जीव जन्तु मैंने अपना सारा जन्म इन्ही के भला करने में गंवाया और व्रत उपास करते २ अपने फूल से शरीर को कांटा बनाया जितना मैंने दान दिया उतना तो कभी किसी के ध्यान में भी न आया होगा जिन जिन तीर्थों की मैंने यात्रा की वहां कभी पंछी ने पर भी न मारा होगा मुझ से बढ़ कर अब इस संसार में और कौन पुण्यात्मा है और आगे भी कौन हुआ होगा जो मैं ही कृतकार्य नहीं तो फिर और कौन हो सक्ता है मुझे अपने ईश्वर पर दावा है वह मुझे अवश्य अच्छी गति देवेगा ऐसा कब हो सक्ता है कि मुझे भी कुछ दोष लगे इसी अर्से में चोबदार ने पुकारा चौधरी इन्द्रदत्त निगाह

॥ कहानी ठेंठ हिन्दी में ॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूं उस अपने बनानेवाले के साम्हने जिस ने हम सब को बनाया और बात की बात में वुह कर दिखाया जिस का भेद किसी ने न पाया आतियां जातियां जो सांसें हैं उस के बिनध्यान सब यह फांसें हैं यह कल का पुतला जो अपने उस खिलाड़ी की सुध रखे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़ुवा कसैला क्यों हो उस फल की मिठाई चखे जो बड़ों से बड़े अगलोंने चखी है देखने को तो आंखें दीं और सुन्ने को यह कान दिये नाक भी ऊंची सब में करदी मरतों को जी दान दिये मट्टी के बासन को इतनी सकत कहां जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके सच है जो बना हो सो अपने बनानेवाले को क्या सराहे और क्या कहे यों जिस का जी चाहे पड़ा बके सिर से लगा पांवतक जितने रोंगटे हैं जो सब के सब बोल उठें और सराहा करें और इतने बरस इसी ध्यान में रहें जितने सारी नदियों में रेत और फूल फलियां खेत में हैं तो भी न होसके कराहा करें । अब यहां से लिखनेवाला यों लिखता है कि एकदिन बैठे बैठे यह बात अपने ध्यान चढी कोई कहानी ऐसी कहिये जिस में हिन्दवीछुट् और किसी बोली की पुट् न मिले तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप खिले बाहर की बोली और गंवारी कुछ उस के बीच में न हो अपने मिलनेवालों में से एक कोई बड़े पढ़े लिखे पुराने धुराने डाग बड़े घाग यह खटराग लाये सिर हिला कर मुह ठठिया कर नाक भौं चढ़ा कर आंखें पथरा कर लगे कहने यह बात होती दिखाई नहीं देती हिन्दवीपन् भी न निकले और भाखापन भी न ठुसजाय जैसे भले लोग अच्छों से अच्छे आपुस में बोलते चालते हैं ज्योंकात्यों वही सब डौल रहे औ छांह किसी की न पड़े यह नहीं होनेका मैंने इन की ठण्डी सांस की फांस का टहोका खाकर झुंझला कर कहा मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को परबत कर दिखाऊं और झूठ सच बोल के उङ्गलियां नचाऊं और बेसुरी बेठिकाने की उलझी सुलझी तान् लेजाऊं जो मुझ से न हो सकता तो भला यह बात मुंह से क्यों निकालता जिस ढबसे होता इस बखेड़े को टालता ॥ अब इस कहानी का कहनेवाला यहां आप को जताता है और जैसा कुछ लोग उसे पुकारते हैं कह सुनाता है दहना हाथ मुंह पर फेर आप को जताता हूं जो मेरे दाता ने चाहा तो वुह तावभाव और रावचाव और कूदफांद

॥ पदमावत ॥

	नागमती चितौर पंथ हेरा	। पिउ जो गये फिरि कीन्ह न फेरा ॥
	नागर नारि काहू बस परा	। तेइं बिमोहि मोसों चित हरा ॥
	सुआ काल होइ लेइगा पीऊ	। पीउ न जात जात बरु जीऊ ॥
	भयेउ नरायन बावन करा	। राज करत राजा बलि छरा ॥
	करन बान लीन्हेंउ कै छंदू	। भरतहिं भयेउ झलमला अनंदू ॥
	मानत भोग गोपीचंद भोगी	। लै उपसवां जलंधर जोगी ॥
	लेइके कंतहि भा गरुर अलोपी	। कठिन बिछोह जिअहिं किमि गोपी ॥
दोहा ।	सारस जोरी किमि हरी	। मारि गयो किन खाग ॥
	झुरि झुरि मांजरि धन भई	। बिरह की लागी आग ॥
चौपाई ।	पिउ बियोग अस बाउर जीऊ	। पपिहा तस बोलै पिउ पिऊ ॥
	अधिक काम दगधे सो कामां	। हरि लै सुआ गयो पिउ नामां ॥
	बिरहबान तस लाग न डोली	। रकत पसीज भीज तन चोली ॥
	संग हिय हारि रही हो बारी	। हरियर प्रान तजै अब नारी ॥
	खिन एक आउ पेट मंह सांसा	। खिनहि जाइ सब होइ निरासा ॥
	पौन डोलाए पसीज न चोला	। फिर कै समझ नारि मुख बोला ॥
	प्रान पयान होत को राखा	। कोइल आउ चातिक कै भाखा ॥
दोहा ।	आह जो मारे बिरह कै	। आग उठै तेहि हाग ॥
	हंस जो रहा सरीर मंह	। पांख जरे तब भाग ॥
चौपाई ।	पाट महादेव हिये निहारू	। समुझ जीउ चित चेत संभारू ॥
	भंवर कंवल संग होइ मिरावा	। संवरेंही मालति पुनि आवा ॥
	पपिहा स्वांति सों जैस पिरीती	। टेक पियास बाध जिय सेती ॥
	धरती जैस गगन सों नेहा	। पलटि भरे बरखारितु मेंहा ॥
	पुनि बसंत रितु आउ नवेली	। सो रस मधुकर सो रस बेली ॥

कनिष्ठ सिविल व सैन्य अधिकारियों के लिए तैयार पुस्तक 'हिंदी सेलेक्शंस' के अंश, 1867

Excerpts from 'Hindi Selections', a publication brought out for the junior officers of the Civil Services and Military, 1867.

देवरानी जेठानी की कहानी

एक हड़ और लिखी पढ़ी स्त्री की सम्मति से

पंडित गौरी दत्त ने बनाई

श्रीयुत एम. केमसन साहिब बहादुर डैरेकर आफ़ पवलिक इंस्टरक्शन के द्वारा श्रीमन्महा राजाधिराज पश्चिमदेशाधिकारी श्रीयुत लेफ़टिनेंट गवर्नर बहादुर के यहाँ से १००रुपये इनाम मिले

मेरठ

छापेखाने ज़ियाई में छापी गई

सन १८७०

LF LISTED
NATIONAL LIBRARY
No. 10060
30·6·60

भूमिका

स्त्रियों के पढ़ने पढ़ाने के लिये जितनी पुस्तकें लिखी गई हैं सब अपने २ ढंग और रीति से अच्छी हैं परंतु मैंने इस कहानी को नये रंग ढंग से लिखा है मुझ को निश्चय है कि दोनो स्त्री पुरुष इस को पढ़कर अति प्रसन्न होंगे और बहुत लाभ उठायेंगे जब मुझको यह निश्चय हुआ कि स्त्री स्त्रियों की बोली और पुरुष पुरुषों की पसंद करते हैं । और जो कोई स्त्री पुरुषों की बोली वा

पुरुष स्त्रियों की बोली बोलता है, उस को नाम धरते हैं इस कारण मैंने इस पुस्तक में स्त्रियों ही की बोल चाल और वही शब्द जहाँ जैसा आशय है लिखे हैं और यह वह बोली है जो इस ज़िले के बनियों के कुटुंब में स्त्री पुरुष वा लड़के बाले बोलते चालते हैं संस्कृत के बहुत शब्द और पुस्तकों जैसे इसलिये नहीं लिखे कि न कोई चितसे पढ़ता है और न सुनता है इस पुस्तक में यह भी दर्शा दिया है कि इस देश के बनिये । जन्म मरण विवाहादि में क्या करते हैं ।

के यहाँ से चिट्ठी नंबर २६७४ लिखी हुई २४ जून सन् १८७० के अनुसार इस पुस्तक के कर्त्ता पंडित गौरी दत्त को १०० रुपये इनाम मिले ॥ ॥

दया उन की मुझ पर अधिक चित्त से जो मेरी कहानी पढ़ें चित्त से । रही भूल मुझ से जो इस में कहीं बना अपनी पुस्तक में लेवें वहीं दया से कृपा से क्षमा रीति से । छिपावें बुरों को भले प्रीति से ॥

कहानी

मेरठ में सर्व सुख नाम एक अग्रवाला बनियाँ था मंडी में आड़त की दूकान थी आसपास के गावों से लोग सौदा लाते इस की दूकान पर बेच जाते पैसा रुपया तुलाई का इसके हाथ भी लगजाता और जब कभी भाव चढ़ा देखता हज़ार दो हज़ार का नाज पात लेकर दूकान में डाल देता फ़ायदा देख उसे बेच डालता ब्याज बट्टे और गिर्वी पाते की भी उसे बहुतेरी आमदनी थी हाट

तुम्हें जोड़े सो थोड़ा आगे तेरा घर है भगवान इसकी उमर लगावे तुझे । बहुत कुछ देगा बहू की गोद में लड़का रोने लगा और कहने लगा कि मैं तो अपनी मा के पास जाऊँगा सबने कहा येही तेरी मा है वह न माना और जेठानी की गोद में आगया और कहने लगा कि मा घर को चल जेठानी आँसू भर लाई और कहने लगी बेटा येही तेरी मा है और येही तेरा घर है सुखदेई की माने कहा बीबी दो चार दिन अभी तू यहीं रह जब पर्चे जाय

पं० गौरीदत्त की सहायता से तैयार की गई पुस्तक 'देवरानी जेठानी की कहानी', प्रकाशन काल 1870

Excerpts from 'Devrani Jhethani Ki Kahani', a book created by the assistance of Pandit Gauridutt, published around 1870.

हिन्दी हिन्दूई मुन्तखबात।

CHRESTOMATHIE HINDIE

ET

HINDOUIE

À L'USAGE
DES ÉLÈVES DE L'ÉCOLE SPÉCIALE DES LANGUES ORIENTALES VIVANTES
PRÈS LA BIBLIOTHÈQUE NATIONALE

PARIS
IMPRIMERIE NATIONALE
M DCCC XLIX

हिन्दी हिन्दूई मुन्तखबात।

सिंहासन बत्तीसी।

सत्यावती पुतली बोला।

एक दिन राजा बीर बिक्रमा जीत सभा में इंद्र समान बैठा था और गंधर्व मधुर मधुर सुरों से गा रहे थे पातुर नृत्य कर भाव बता रहीं थी कहीं भाट खडे हुए जस बरनन कर रहे थे किसी तरफ़ ब्राह्मन बेद पाठ कर रहे थे किसी तरफ़ मल्ल आपस में युद्ध कर रहे थे और किसी तरफ़ चीते कुत्ते सियाहगोश हरन मेंढे मीरशिकार लिये खडे थे और जितनी तैयारी राजाओं की चाहिये सब थी। सभा में एक से एक पंडित चतुर और बीर बैठा था उन्ह में राजा इंद्र की तरह बैठा था और सब सामान इंद्र के अखाडे का सा था। इस में राजा ने अपने चित में बिचार कर पंडितों से कहा कि तुम एक बात मेरी सुनों कि स्वर्ग में राजा इंद्र जो है सो मर्त्यलोक का सब मरम जानता है कहो कि पाताल का राजा कौन है और किस जगह वह रहता है।

तब उन्ह में से एक पंडित बोला कि महाराज। पाताल का राजा

शेशनाग है जिस के हज़ार फन हैं और पद्मिनी रानी उस के यहां है और कभी सोग संताप उसे नहीं ब्यापता आनंद से अचल राज वहां का वह करता है और जैसा वह राजा सुखी है वैसा संसार में कोई नहीं।

यह सुनकर राजा को उस के मिलने की इच्छा हुई। बैतालों को बुलाकर कहा कि मेरे तईं पाताल को ले चलो मैं शेशनाग के दरसन को जाउंगा।

बैताल उठाकर पाताल को ले गये और शेशनाग का दूर से मंदिर दिखा दिया राजा ने दूर से देख बैतालों को बिदा किया और आप मन्दिर को चला। जब जाकर उस के पास पहुंचा देखे तो वह कंचन का मन्दिर रत्न जडे हुये जगमगा रहा है और ऐसी जोति है उस की कि जिस में रोशनी के सिवा रात दिन कुछ नहीं मअ़लूम होता। द्वा द्वार पर कंवल के फूलों की बंदनवारें बंधीं हुई हैं और घर घर आनन्द हो रहे हैं। राजा कुछ डरता डरता कुछ खुशी खुशी द्वारे जा खड़ा हुआ और वहां के द्वारपालों से दंडवत कर कहा महाराज को हमारा समाचार पहुंचाओ कहो कि मर्त्यलोक से एक राजा आप के दरसन को आया है। दरबान राजा को ख़बर देने गया और यह द्वार पर खड़ा हुआ कहता था धन्य भाग हैं मेरे कि मैं यहां तक आन पहुंचा हूं और चारों तरफ से राम कृष्ण राम कृष्ण की आवाज़ आती थी और राजा के मन्दिर से बेद की धुनि कान पड़ती थी जब दरबान राजा के सनमुख जा प्रनाम कर हाथ जोडे खड़ा हुआ राजा ने उस की ओर दृष्ट की।

पेरिस से छपी पुस्तक 'हिंदी हिन्दूई मुन्तखबात', 1859 'Hindi Hindui Muntaqhbat', published from Paris, 1859.

RUDIMENTS

DE

LA LANGUE HINDOUI

PAR M. GARCIN DE TASSY

MEMBRE DE L'INSTITUT, ETC. ETC. ETC.

जिती देव बाणी प्रगट है कबिता की घात
ते भाषा में होय तौ सब समझें इस बात

Les ressources de la poésie qui existent en sanscrit se trouvent aussi en hindoui, et elles sont plus appréciables pour tous.

KULPATI.

PARIS

IMPRIMÉ PAR AUTORISATION DU ROI

A L'IMPRIMERIE ROYALE

M DCCC XLVII

cun signe; mais il est essentiel de faire remarquer, à ce sujet, qu'il n'en est pas en hindoui comme en sanscrit, où on doit faire suivre de la voyelle *a* toutes les consonnes qui terminent une syllabe, à moins qu'elles ne soient accompagnées d'une autre voyelle ou marquées du signe nommé *viram*, qui est ainsi formé ्, et qui équivaut au *jazma* arabe et à notre *e* muet.

1° Il ne faut pas prononcer cet *a* bref à la fin des mots; ainsi, par exemple, on ne doit pas dire शुभ *subha*, mais *subh*. Cette règle est tellement générale que, lorsqu'on veut prononcer l'*a* final, on écrit un *â* long, comme en urdû. Ainsi on trouve dans le *Prem-Sâgar* दावा अगनि, pour दाव अगनि (ou दावागनि) « incendie de forêt. »

2° Il ne faut pas le prononcer avant les désinences ni avant ce qui est ajouté à la racine du mot, ni entre les mots composés. Ainsi अपनौ, गरजतु, मनमानता, डगमगानौ, ne doivent pas être prononcés *apanau*, *garajatu*, *manamânatâ*, *ḍagamagânau*, mais *apnau*, *garajtu*, *manmântâ*, *ḍagmagânau*.

Les autres voyelles sont ainsi formées après les consonnes :

ा â, ि i, ी î, ु u, ू û, ृ ṛi, ॄ ṝi, ॢ ḷri, ॣ ḹri, े é, ै âi, ो o, ौ au.

Le caractère ि, qui représente l'*i* bref, se place toujours avant la consonne, quoiqu'il ne se prononce qu'après, ainsi que les autres voyelles. L'*u* bref groupé avec le *ra*, se forme ainsi : रु, et le long : रू ou रू.

Le signe ं, qui indique une nasale qu'on distingue à peine dans la prononciation, se nomme *anuswara*. En hindoui, il remplace les cinq nasales muettes ङ, ञ, ण, न et म; on le met ou on l'ôte presque *ad libitum*, et il est souvent ainsi figuré ँ, surtout quand on ne doit pas le faire sentir. Quant au signe : qui marque le *h* final, également imperceptible, il se nomme *viçarga*.

En hindoui, le ड़ *ra* remplace souvent le ल *la* dans les mots où, en hindi, cette dernière lettre est employée. Exemple : बैठारनौ (en hindi बैठालना) « faire asseoir. »

गार्सा द तासी रचित पेरिस से छपी पुस्तक 'रूडिमेंट्स द ला लैंग्यूइ हिन्दोइ', 1857

Excerpts from the French book "Rudiments De La Langue Hindoui', authored by Par M. Garcin De Tassy, 1857.

शमशाद-सौसन।

(नाटक।)

"दुर्बल को न सताइये जाकी मोटी हाय,
मुई खाल की सांस से सार भस्म होइ जाय।"
कबीर।

اے زبر دست زیر دست آزار
گرم تا کے بماند این بازار
सादी।

पटना।

बिहार-बन्धु छापाखाना, बांकीपुर।

१८८०।

शमशाद-सौसन।

पहला अंक।

पहली झांकी।

बाढ़, मौल्वी हियातबख्श का मकान।

सौसन गा रही है।

(गीत।)

रागणी झिंझौटी, ताल मध्यमान।
"तनज्जुल ने की है बुरी गत हमारी,
बहुत दूर पहुंचो है नुक्बत हमारी।
गई गुज़री दुनिया से इज्ज़त हमारी।
नहीं कुछ उभरने की सूरत हमारी।
पड़े हैं एक उम्मीद के हम सहारे।
तवक्के प' जन्नत की जीते हैं सारे।
हम हीं हैं वह नस्लें मुबारक यहां की,
कि बख़्शेंगे जो दीन की उस्तुवारी?
करेंगे हम हीं क़ौम की ग़मगुसारी?
हमहीं पर उमीदें हैं मौक़ूफ़ सारी?
हम ही शमा इस्लाम रोशन करेंगे?
बड़ों का हमही नाम रोशन करेंगे?"—हाली

[गीतख़तम होने के कुछ पेश्तर ही शमशाद का चुपे चुपे आना और सौसन के पीछे खड़े होना।]

नाटक के आदमियों के नाम।

मर्द।

मौलवी हियातबख्श	..	.. बाढ़ के एक रईस।
शमशाद हुसैन	...	... "
कैसर	...	हियात बख्श का नाती।
बख्शा	...	हियात बख्श का नौकर [लड़का।]
मिस्टर री	..	... जौएन्ट मजिस्ट्रेट।

औरतें।

सौसन	..	हियात बख्श की पोती।
हमीदा	...	शमशाद की बहन।

कोन्स्टेब्ल, कैदी वगैरह।

२ शमशाद-सौसन।

सौसन। (गीत ख़तम होने के बाद) उन को यह गीत निहायत ही पसन्द है।

शमशाद। (सामने आ कर प्यार की आवाज़ से) चूंकि मुझे यह गीत पसन्द है क्या इसी वास्ते गा रही थीं, सौसन?

सौ-। (उठके और शरमा कर) आओ, क्या तुम यहां बहुत देर से खड़े थे?

शम-। नहीं, तो अभी चला आता हूं।

सौ-। (मुस्कुरा के) अच्छा "उनको पसन्द है" इस जुम्ले से तुमने यह मानी क्यों कर निकाला कि मेरा "तुमसे" मतलब था?

शम-। वरन क्या किसी और से—

सौ-। (शर्मा कर) जाओ, जाओ, तुम्हें तो हर बातों में चुहल ही सूझती है।

शम-। फ़िलहक़ीक़त, मैं तुरत ही जाऊंगा।

सौ-। बस, आते देर नहीं कि "जाऊंगा, जाऊंगा" करने लगे। जाओ, जाओ अभी जाओ। इस तरह आने के वास्ते बुलाया था किसने?

शम-। (हंस कर) ख़ैर तो लो मैं जाता हूं। (दो एक क़दम आगे बढ़ना।)

३ शमशाद-सौसन।

सौ-। (हाथ थांमकर) बैठो।

श-। नहीं, अब नहीं।

सौ-। तुम्हें हमारे सरकी क़सम, बैठो। (दोनों का बैठना) दादा जान से आज मुलाक़ात हुई थी?

श-। हुई थी। उन्हें हमलोगों की शादी हो जाने की बहुत जल्दी है। कहते थे कि अब देर करना लाज़िम नहीं।

सौ-। आज किधर जाने की तइयारी है?

श-। जोएन्ट मजिस्ट्रेट री साहब के यहां।

सौ-। किस लिये?

श-। वह हमारे ६००० रुपयों के क़र्ज़दार हैं, उन्हीं रुपयों के लिये।

सौ-। वह अंगरेज़ कैसा आदमी है?

श-। सुबहानअल्लाह, बहुत ही लाइक़ शख़्स है। इस तरह की हिन्दुस्तानियों की मुहब्बत, ख़ुदा की क़सम, किसी अंगरेज़ में न देखी। माशाअल्लाह, री साहब हिन्दुस्तानी ज़बान बहुत अच्छी बोलते हैं, मुझसे भी हिन्दुस्तानी ही में गुफ़्तगू करते हैं। लफ़्ज़ों का तलफ़्फ़ुज़ भी बहुत सही करते हैं।

पटना के बिहार बन्धु छापेखाने से प्रकाशित नाटक की पुस्तक 'शमशाद सौसन' । 1880 ई.

'Shamshad Sausan', a play published by the Bihar Bandhu Publishing House, Patna, 1880.

शकुन्तला॥

THE ŚAKUNTALÂ

IN HINDÎ.

THE TEXT OF KAṄVA LACHHMAN SIṄH

Critically Edited,

WITH

GRAMMATICAL, IDIOMATICAL, AND EXEGETICAL NOTES,

BY

FREDERIC PINCOTT,
MEMBER OF THE ROYAL ASIATIC SOCIETY.

LONDON:
WM. H. ALLEN AND CO., 13, WATERLOO PLACE, PALL MALL, S.W.
1890

शकुन्तला॥

अङ्क १

स्थान वन॥

(दुष्यन्त रथ पर चढ़ा धनुष बाण लिये[1] हरिण को खेदता सारथी सहित आया[2])

सारथी। (पहले हरिण की ओर फिर राजा की ओर देखकर) महाराज जब मैं इस करसालय[3] पर दृष्टि करता हूं और फिर आप को धनुष चढ़ाये देखता हूं तौ साक्षात ऐसा ध्यान[4] बंधता है मानों पिनाक[5] संधान किये शिव जी शूकर के पीछे जाते हैं[6]॥

दुष्यन्त। इस मृग ने हम को बहुत थकाया है। देखो कभी[7] सिर झुकाये रथ को फिर फिर देखता चौकड़ी भरता है कभी तीर लगने के डर से सिमटता है। अब देखो हांफता हुआ अधखुले मुख से घास खाने को ठिठका है[8] फिर देखो कैसी छलांग भरी है कि[10] धरती से ऊपर ही[11] दिखाई देता है। देखो अब इतने वेग से जाता है कि दिखाई भी सहज नहीं पड़ता[12]॥

सार०। महाराज अब तक धरती ऊंची नीची थी[13]। इस से मैं ने घोड़े रोक रोककर[14] चलाये थे और इसी से वह कुरङ्ग दूर निकल गया है। परंतु अब भूमि एक सी[15] आई। दो ही[16] सरपट में ले लेंगे॥

दुष्य०। अब घोड़ों की रास छोड़ो॥

सार०। जो आज्ञा[17] (पहले रथ को बराबर चलाया फिर मंदा किया)

NOTES TO THE ŚAKUNTALÂ.

[When a reference is made from one note to another, a note in the same Act is always intended, unless otherwise specified.]

1. *liye* is an indeclinable past part. referring to an objective, and used in a sense akin to that of the conjunctive participle, but importing a continuance of the action spoken of, during the time indicated by the finite verb of the sentence in which it occurs. The word *chaṛhâ*, just before, is adjectival, and therefore retains its inflexional power.

2. The stage-directions are in the past tense, because the action is generally performed before the speech commences.

3. The black antelope was much esteemed for its skin, which was the appropriate dress of those who devoted the latter portion of their lives to holy meditation: see Manu, ii. 64, vi. 6. The land on which this animal naturally grazes is held to be fit for sacrificial purposes: see Manu, ii. 23.

4. *Lit.* "a thought of this nature is forming,—(it is) as though" &c. *Ki* could be optionally inserted before *mânoṇ*.

5. Śiva is called Pinâkin, "armed with a trident," or else with a wonderful bow, called Pinâka. Benfey thinks the latter. The Hindî text inclines us to understand a *bow*, as the Charioteer is comparing Dushyanta's *dhanush* with Śiva's *pinâk*.

6. Plural for singular. This is honorific. The incident probably alluded to will be found in Wilson's Vishṇu-purâṇa (ed. by Dr. F. Hall), vol. i. p. 131.

7. *kabhî* . . . . *kabhî*, "at one time . . . at another time."

8. Past tenses, to express the rapidity of the transitions. *Lit.* "See! he has stopped . . . . he has jumped," &c.

9. *haisâ* and its congeners are frequently used, as here, interjectionally, not interrogatively. The sense is, "See, what a bound he has taken!"

10. *ki* is not infrequently used, as here, in the sense of "insomuch that."

11. *Transl.* "He appears quite up off the ground." Here one preposition governs another.

12. *dikhâî paṛtâ* or *detâ* literally means "the sight befalls *or* is given," respectively. *Lit.* "The very sight of him is not easy."

13. *Transl.* "hitherto the ground has been undulating." Notice that *thî* is here, and often elsewhere, the equivalent of "has been."

14. The verbal repetition denotes the repetition of the act. "With constant checkings."

15. *ek sî* = "level," "uniform."

16. "In *two* bounds."

17. *jo âjnâ* is an abbreviation of such a phrase as *jo âjnâ râjâ dete haiṇ us kâ sâdhar maiṇ karûṇgâ*.

18. See note 9.

19. See note 10.

20. *Lit.* "even the dust of (their) hoofs did not attach (to them);" that is, they outstripped the very dust raised by their own hoofs.

21. *karke* here, and in many other places, has the sense of *se*, "with."

'शकुन्तला' के अनुवाद का फ्रेडरिक पिंकाट द्वारा किया गया समालोचनात्मक संपादन, 1890

Cover page of the 'Shakuntala' critically edited by Frederic Pincott, Member of the Royal Asiatic Society, 1890.

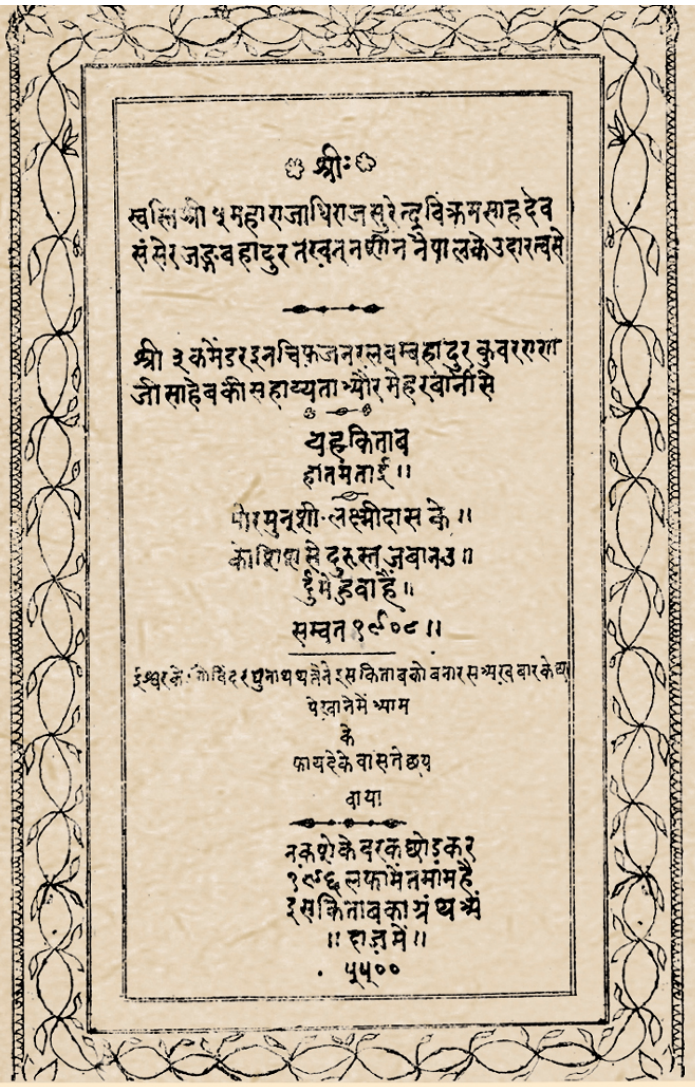

॥ श्रीः ॥

स्वस्ति श्री ५ महाराजाधिराज सुरेन्द्र विक्रम साह देव संसेर जङ्ग बहादुर नखत नशीन नेपालके उदारत्वसे

श्री ३ कमेंडर इनचिफ़ जनरल वम्बहादुर कुंवर राणा जी साहेब की सहाय्यता श्रौर मेहरबानी से

यह किताब
हातमताई ॥
मीर मुनशी लक्ष्मीदास के ॥
कोशिश से दुरुस्त ज़बानउ ॥
र्दु में हुवा हैं ॥
सम्वत १९०८ ॥

ईश्वर के गोविंद रघुनाथ थत्तेने इस किताबको बनारस अख़बार के छापेख़ानेमें आम
के
फ़ायदेके वास्ते छप
वाया

नक़शेके वरक़ छोड़कर
१९६ सफ़ामें तमाम है
इस किताबका ग्रंथ श्रं
॥ शाज़ में ॥
५५००

॥ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ क़िस्सा हातमताई का ॥ ॥ १

लिखने वालेने यों लिखा है कि अगले ज़मानेमें ने नाम यमन का बादशाह था निहायत साहब मर्तबः फ़ौज अफ़वाज की तरफ़से खुश हाल ज़र श्रौ जवाहर से माला माल था अलक़िस्सः अपनी चचाकी बेटी निकाह में लाकर उम्मेदवार फ़र्ज़ंद हुआ बारे ख़ुदाके फ़ज़ल से कितने दिनोंमें उस बेगम से एक लड़का बड़ा ख़ूबसूरत पैदा हुआ यह ख़बर ख़ुशीकी सुनकर उसने नजूमियों पंडितों को बुलवा कर कहा कि तुम अपनी अपनी अक़ल की रसाई श्रौ पोथी की रूसे दर्याफ़त करो श्रौ बिचारो तो कि इस लड़के के नसीबके से हैं उन्होंने जों दर्याफ़्त किया तो हरऐक तरह से उस शाहज़ादे को साहेबइक़बाल ही पाया श्रर्ज़ किया कि ख़ुदावंद हमको तो अपने अपने इल्मसे यों मालूम होता है कि यह साहबज़ादा हफ़्त एक़लीम का बादशाह होगा श्रौर तमाम उमर काम बराहे ख़ुदाही किया करेगा श्रौर नाम इसका मानंद चांद सूरज के क़यामत तकके दुनियांमे रोशन रहेगा इस बातको सुन कर बादशाह को निहायत ख़ुशी हासिल हुई श्रौर सिजदे शुकर अदा कर के उन लोगों को बहुत सी अशर्फ़ियां श्रौ जवाहर देकर बिदा किया श्रौर उस लड़के का नाम हातम रखकर अपने मुसाहबों से यह बात कही कि तुम जल्द इस बातका इश्तेहार दो कि मेरे मुल्कमें आजके दिन जिस शख़्स के यहां लड़का पैदा हुआ है वह लड़का आजही की तारीख़ से नौकर बादशाही है बल्कि मा बाप उसके महल्ले मुबारक ही में पहुंचाय जावें बल्कि परवरिश भी यहां ही होर हेंगे चुनाचे उसरोज़ उस के मुल्कमें छः हज़ार लड़के पैदा हुऐ थे यह हुक्म सुनते ही हरऐक के मा बाप अपना अपना लड़का हज़ूर आला में पहुंचाय गऐ बिनाबर उसके छः हज़ार दाइयां नौकर रक्खी गई श्रौर ऐक ऐक लड़केपर तक़सीम हो गई श्रौर कई ऐक दाइयां इसके वास्ते भी मुक़र्रर हुई वे किस किस तरह से उसको थपकियां श्रौर लोरियां देकर चुमकारतियां थीं कि यह किसी तरह से दूध पिये पर वह हरगिज़ आंखें न खोलता था श्रौर न किसी की छाती मुंहमें लेता था चुनाचे यह ख़बर भी बादशाह तक पहुंची वह इस बात के सुनते ही निहायत फ़िक्रमंद हुआ श्रौर अपने मुसाहबोंसे कहने लगा कि तुम जल्द उन स्यानों को बुला कर पूछो ग़रज़ वे आऐ श्रौर अर्ज़ करने लगे कि जहांपनाह यह हातम ज़मानः होगा तनहा नहीं दूध पियेगा पहले उन लड़कों को पिलवा लेगा तो पीछे आप पियेगा श्रौर जब तक जीता रहेगा तब तक अकेला न खावेगा न पीवेगा निदान जब वे

नेपाल राज परिवार के संरक्षण व आर्थिक सहायता से तैयार पुस्तक 'किस्सा हातिमताई', 19 वीं शती का मध्य

Excerpts from a copy of "Kissa Hatim Tai" a literary work commissioned by the Nepalese royalty in the 19th century.

IMPERIAL 19 NOV. 96 LIBRARY

THE

SATSAIYA OF BIHARI,

WITH A

COMMENTARY ENTITLED THE LALA-CANDRIKA,

BY

ÇRI LALLU LAL KAVI,
BHASHA MUNSHI IN THE COLLEGE OF FORT WILLIAM.

Edited with an Introduction and Notes

BY

G. A. GRIERSON, C.I.E., PH.D., I.C.S.

CALCUTTA:
OFFICE OF THE SUPERINTENDENT OF GOVERNMENT PRINTING, INDIA.
1896.

IMPERIAL 19 NOV. 96 LIBRARY

PREFACE.

SOME three years ago it was discovered that copies of the *Lāla-candrikā*, which is a text-book for the Government Honour Examination in Hindi, were not obtainable in the book-market, and I was asked to carry a reprint of the first and only edition of 1819 through the press. It was then intended to give a mere reproduction of the original, only obvious misprints being corrected, but, as the work progressed, I was unable to let it go out of my hands in such a condition. Mistakes (not necessarily obvious misprints) were found to teem on every page, and the work grew till it became a new and somewhat carefully revised edition.

I have edited the text of Bihārī with considerable freedom, selecting the best readings compatible with Lallū-jī-lāl's commentary, and adhering as much as possible to what the latter gave as his version of the text. As regards the commentary, I have borne in mind that the original was printed at its author's own press under his personal supervision. I have, therefore, not felt myself at liberty to alter his language, even where it is clearly wrong. I have confined myself to correcting his numerous misprints and his bad orthography.

Bihāri-lāl's verses form a dainty collection, and the Government of India Press has endeavoured to produce the work in a style worthy of its contents.

That there are errors of mine, and slips in proof-reading in this volume, I am but too conscious. I can only apologize for them, and assure my readers that I believe it is far more free from these defects than the previous edition. The preparation of this book has been no light task, and more than a fair share of my eyesight lies buried in it.

It is hoped that the long introduction will prove useful to the student.

GEO. A. GRIERSON.

HOWRAH;
The 29th March 1895.

भूमिका ॥

हौं विनवौं सब कविन के चरण-कमल सिर नाइ।
प्रगट करी तिहु लोक में कविता जिन बहु भाइ ॥ १ ॥
सो कविता है भाँति की आरष पौरुष जानि।
आरष सुर अरु मुनिनु कृत नर-कृत पौरुष मानि ॥ २ ॥
पौरुष कविता त्रिविधि है कवि सब कहत बखानि।
प्रथम देव-वाणी बहुरि प्राकृति भाषा जानि ॥ ३ ॥
देस-भेद तें होति सो भाषा बहुत प्रकार।
बरनत हैं तिन सबनि में ग्वारियरी रस सार ॥ ४ ॥
व्रज-भाषा भावत सकल सुर-वाणी सम-तूल।
ताहि बखानत सकल कवि जानि महा-रस-मूल ॥ ५ ॥
व्रज-भाषा बरनी कविनु बहु विधि बुद्धि विलास।
सब को भूषण सतसया करी बिहारी दास ॥ ६ ॥
जो कोऊ रस रीति को समझ्यो चाहै सार।
पढै बिहारी सतसया कविता को शृंगार ॥ ७ ॥
उदय अस्त लौं अवनि पै सब के या की चाह।
सुनत बिहारी सतसया सब-ही करत सराह ॥ ८ ॥
भाँति भाँति के अर्थ बहु या में गूढ अगूढ।
जाहि सुने रस रीति को मग समझै अति मूढ ॥ ९ ॥
विविध नायका-भेद अरु अलंकार नृप-नीति।
पढै बिहारी सतसया जानै सब कवि रीति ॥ १० ॥

बिहारी सतसई जिसकी भूमिका ग्रियर्सन ने लिखी थी, प्रकाशन वर्ष 1896

सुधा

महाकवि श्रीविहारीदास

(सुप्रसिद्ध बिहारी-सतसई के रचयिता)

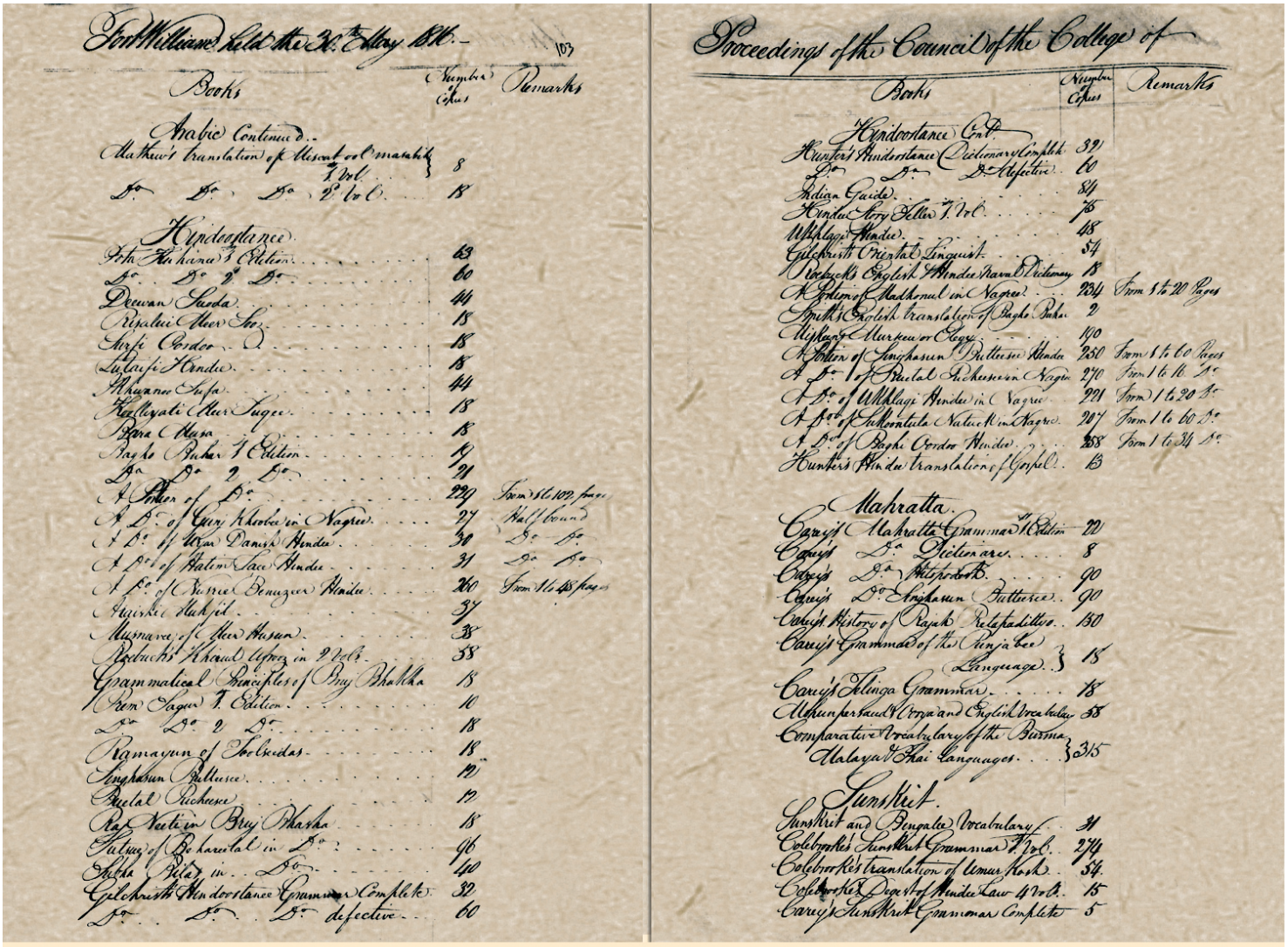

Fort William held the 30th May 1816.— 103

Books	Number of Copies	Remarks
Arabic Continued..		
Mathew's translation of Miscat ool masabih 1st Vol.	8	
Do. Do. Do. 2d Vol.	18	
Hindoostanee.		
Pota Kuhanee 1st Edition	63	
Do. Do. 2d Do.	60	
Deewan Sooda	44	
Risalei Meer Soz	18	
Surfi Oordoo	18	
Lutaifi Hindee	18	
Ikhwanoo Sufa	44	
Koolliyati Meer Tuqee	18	
Bora Musa	18	
Bagho Buhar 1st Edition	19	
Do. Do. 2 Do.	21	
A Portion of Do.	229	From 1 to 102 pages
A Do. of Gunj Khoobee in Nagree	27	Half bound
A Do. of Ukar Danish Hindee	30	Do. Do.
A Do. of Hatim Taee Hindee	31	Do. Do.
A Do. of Nusree Benuzeer Hindee	260	From 1 to 48 pages
Araishi Muhfil	37	
Musnuvee of Meer Husun	38	
Roebuck's Khirud Ufroz in 2 Vols.	58	
Grammatical Principles of Brij Bhakha	18	
Prem Sagur 1st Edition	10	
Do. Do. 2 Do.	18	
Ramayun of Toolseedas	18	
Singhasun Buttusee	12	
Bytal Pucheesee	12	
Raj Neeti in Brij Bhasha	18	
Sutsue of Beharee lal in Do.	96	
Sibha Bilas in Do.	40	
Gilchrist's Hindoostanee Grammar Complete	32	
Do. Do. Do. defective	60	

Proceedings of the Council of the College of

Books	Number of Copies	Remarks
Hindoostanee Contd.		
Hunter's Hindoostanee Dictionary Complete	391	
Do. Do. Do. defective	60	
Indian Guide	84	
Hindee Story Teller 1st Vol.	75	
Ukhlaqi Hindee	48	
Gilchrist's Oriental Linguist	54	
Roebuck's English & Hindee Naval Dictionary	18	
A Portion of Madhonul in Nagree	234	From 1 to 20 Pages
Smith's English translation of Bagho Buhar	2	
Mishkaty Musreeu or Elegy	190	
A Portion of Singhasun Butteesee Hindee	250	From 1 to 60 Pages
A Do. of Baital Pucheesee in Nagree	270	From 1 to 16 Do.
A Do. of Ukhlaqi Hindee in Nagree	221	From 1 to 20 Do.
A Do. of Sukoontula Natuck in Nagree	207	From 1 to 60 Do.
A Do. of Baghi Oordoo Hindee	258	From 1 to 34 Do.
Hunter's Hindee translation of Gospel	13	
Mahratta.		
Carey's Mahratta Grammar 1st Edition	20	
Carey's Do. Dictionary	8	
Carey's Do. Hitoprodesh	90	
Carey's Do. Singhasun Butteesee	90	
Carey's History of Rajah Pretapadittyo	150	
Carey's Grammar of the Punjabee Language	15	
Carey's Telinga Grammar	18	
Mohunpersaud's Ooriya and English Vocabulary	58	
Comparative Vocabulary of the Burma Malaya & Thai Languages	315	
Sunskrit.		
Sunskrit and Bengalee Vocabulary	31	
Colebrooke's Sunskrit Grammar 1st Vol.	274	
Colebrooke's translation of Umur Kosh	54	
Colebrooke's Digest of Hindee Law 4 Vols.	15	
Carey's Sunskrit Grammar Complete	5	

फोर्ट विलियम कालेज संग्रह के हिन्दुस्तानी पुस्तकों की सूची